ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-9*February-2015

गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता

गुरदेव
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एम. एम. पी.जी. कालेज,
फतेहाबाद

सारांश

भारत में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट के साथ ही हम में से कुछ ने यह कहना शुरू कर दिया है कि गाँधी जी भारत में अप्रासंगिक हो गये है। यद्यपि शेष विश्व में आज भी उन्हें प्रासंगिक माना जाता है। महात्मा गाँधी जी कोई व्यक्ति नहीं है अपितु एक विचार और विचारधारा है। यदि सत्य और अहिंसा आज भी प्रासंगिक है तो हम यह कैसे कह सकते है कि गाँधी जी वर्तमान में अप्रासंगिक हो गये है। अगर ऐसा है तो फिर ऐसे व्यक्ति और विचारधारा को भूला देना चाहिए जिसका कोई वजूद न हो लेकिन फिर हमें यह सोचना पड़ेगा कि जिसे हम भूल रहे है उसकी संयुक्त राष्ट्र को क्या जरूरत पड़ गई। जो 2 अक्तूबर के दिन को विश्व अहिंसा के रूप में मनाने को तैयार है। इसका मतलब एक दम साफ है कि इस विचारक का दूनिया की नजर में एक अतुलनीय महत्व ह।

मुख्य शब्द धर्म, राजनीति, आध्यात्मिकरण, साम्प्रदायिक।

प्रस्तावना

गाँधीवाद कोई स्थिर दर्शन नहीं है अपितु सामाजिक परिवर्तनों के साथ परिवर्तित होने वाली विचारधारा है। राजनीति का आध्यात्मिकरण कोई मध्य युगीन धार्मिक सिद्धान्त नहीं है। इसके विपरित यह सिद्धान्त विहीन राजनीति का निवारण है। गाँधीवाद केवल विचारधारायी समस्याओं का ही समाधान नही है अपितु यह कश्मीर और अयोध्या जैसी जटिल समस्याओं को सुलझाने में भी सहायक है। हमारे विचारों की संकीर्णता के कारण विभिन्न धर्मो के अनुयायियों के मध्य संघर्ष देखने को मिलता है। कोई व्यक्ति यह सोचता है कि दूसरे के धार्मिक विश्वास को चोट पहुंचाकर धार्मिक एकता प्राप्त की जा सकती है तो यह केवल एक भ्रम है। इससे केवल धार्मिक एकता के स्थान पर धार्मिक संघर्ष को ही बढ़ावा मिलता है। गाँधी जी का सभी धर्मो की बुनियादी सच्चाई में पूर्ण विश्वास था। वे कहते थे कि मेरी यह दिली ख्वाहिश कि इन्सान–इन्सान के साथ भाईचारा कायम करे। जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी और यहूदी सभी एक समान शामिल हो क्योंकि दूनिया के समस्त मजहबों (धर्मो) की बुनियादी सच्चाई में मुझे विश्वास है मेरा यह मानना कि मजहब ईश्वर प्रदत है और उन लोगों के लिए जरूरी है जिन्हें ये ईश्वर से मिले है यदि हम भिन्न–भिन्न मजहबों के मामने वाले की निगाह से पढ़े तो हमें पता चलेगा कि सब मजहबों की जड़ एक ही है।[1]

गाँधी जी ने सभी धर्मो का गहन अध्ययन किया तत्पश्चात वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अन्तर समस्त मजहबों के बुनियादी सिद्धान्त में नही अपितु रूढियो, कर्मकाण्डों एवं जरूरी रीति–रिवाजों में है परंतु रूढ़ियों एवम् कर्मकाण्डों में परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तित नहीं होते तो केवल धर्म के बुनियादी सिद्धान्त और दुनिया के समस्त धर्म यह उपदेश देते है कि समस्त मानव भाईचारा है सब बराबर है। न कोई नीचा है, दुनिया प्रेम से चलती है जहां भलाई है वही प्रेम है, जहाँ प्रेम है वहां सच्चाई है वहीं धर्म राज्य है और यही धर्म का सार है।[2]

वर्तमान परिस्थितियों में भारत में साम्प्रदायिक द्वेष बढ़ता जा रहा है। जगह–जगह धर्म के नाम पर खूनी संघर्ष होते है। ऐसी परिस्थितियों में गाँधी जी का सहनशीलता और सर्वधर्म समभाव का विचार और भी अधिक सार्थक हो जाता है। धार्मिक और साम्प्रदायिक संघर्ष को रोकने में गाँधी जी का यह मूलमंत्र आज भी प्रभावशाली है।

मन्दिर मस्जिद जैसी जटिल धार्मिक समस्या का समाधान भी गाँधीवादी दर्शन में ही खोजा जा सकता है आवश्यकता लोगों को मानसिक रूप से तैयार करने के लिए गाँधीवादी आदर्शो में आस्था रखने और उनका प्रचार करने की है।

तथाकथित धर्म निरपेक्षता आज भारतीय राजनीति में अपने राजनीतिक स्वार्थो को पूरा करने का एक साधन बन गई है। धर्म निरपेक्षता की अवधारणा का प्रयोग राजनीतिक दलों द्वारा अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति करने तथा

साम्प्रदायिक द्वेष को बढ़ावा देने के लिए गलत रूप में किया जाने लगा है ।

ऐसी परिस्थिति में गाँधी जी द्वारा राजनीति में स्थापित नैतिक मूल्यों की अवधारणा अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। नैतिक मूल्यों की स्थापना से राजनीति में संकीर्ण राजनीतिक हितों पर रोक लगाने में सहायता मिलती है। इसलिए आज राजनीति में नैतिक मूल्यों की अवधारणा का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है तथा विश्व शांति का लक्ष्य हासिल करने के लिए राष्ट्र का निर्माण हो रहा है।[3]

गाँधी जी के अनुसार राजनीति का आधार धर्म होना चाहिए। वे धर्म को व्यक्तियों का निजी मामला नहीं मानते थे। उनके अनुसार धर्म व्यक्तिगत नहीं अपितु सार्वजनिक है, संकीर्ण नही अपितु व्यापक है। सामान्य नही अपितु विशेष है अतः धर्म राजनीति में भी प्रवेश कर सकता है। वे राजनीति में "मैकियावली प्रवृत्ति अर्थात् धर्म रहित राजनीति हो जिसमें छल–कपट की प्रमुखता हो के सर्वथा विरोधी थे। वे धर्म विहीन व नैतिकता विहीन राजनीति को किसी भी स्थिति में उपयुक्त नही मानते थे। उनके अनुसार राजनीति नैतिकता और मानव कल्याण का साधन है।[4]

अतः उन्होंने सत्य, अहिंसा और धर्म पर आधारित राजनीति को महत्व दिया जिसकी भारत को वर्तमान में पूरी आवश्यकता है जिसको अपनाकर भारतीय राजनीति सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण कर सकती है।

आज भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिकता द्वेष की भावना दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। धर्म के नाम पर चारों तरफ अशांति फैली हुई है जिसके कारण आज हम किसी भी क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर पिछड़ते जा रहे है जब तक यथास्थिति बनी रहेगी। मन्दिर, मस्जिद जेसी जटिल धार्मिक समस्यों को समाधान गाँधीवादी दर्शन में ही खोजा जा सकता है। आवश्यकता है उन आदर्शो की पालना और प्रचार करने की और लोगों को मानसिक रूप से तैयार करने की। धार्मिक सद्भाव स्थापित करने के लिए गाँधी दर्शन के निम्नवत् तथ्य आज भी प्रासंगिक है– "सभी धर्म सत्य है– सभी धर्मो का उद्देश्य एक है यद्यपि इसके लिए अलग–अलग मार्गो का अनुसरण करते है सभी धर्म एक–दूसरे के पूरक है।[5]

महात्मा गाँधी की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' एक अमूल्य रचना के साथ–साथ सत्य का मार्ग दिखाने वाला अलोकिक माध्यम ज्ञान का भंडार एवं मानव उत्थान का एक अचूक साधन भी है। गाँधी जी ने आत्मकथा में सहनशीलता धारण करने के लिए प्रबल याचना की है। आज जितना भी आपसी वैर, ईर्ष्या, द्वेष आदि भावों का कुसाम्राज्य फैल चुका है वो सब असहनशीलता का परिणाम है। गाँधी जी ने जीवन में अनेक घोर अपमानों को बड़ी शालीनता के साथ सहन किया और उस शिखर को छुआ जहां पर उनका अपमान करने वाले लोगों ने भी पश्चाताप करके बड़ी श्रद्धा के साथ उनके समक्ष शीश झुकाया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवसाय के प्रति पूर्णतः ईमानदार, वफादार एवं कर्मठ बनना बताया है। गाँधी जी ने वकालत जैसे उस व्यवसाय के प्रति सच्ची समर्पण भावना का प्रदर्शन किया। जिसके बारे में आम राय है कि यह पेशा झूठ के बिन चल ही नही सकता। गाँधी जी के कथानुसार झूठ बोलकर मैं न तो कोई पद लेना चाहता था और न ही बेईमानी का पैसा कमाना चाहता था। इसलिए मुझ पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सचमुच गाँधी जी अपने पेशे के प्रति सच्चे भाव से समर्पित थे। उन्होंने वकालत के दौरान कभी असत्य का प्रयोग नहीं किया और अपने मुवक्किलों से जेब खर्च के इलावा कुछ भी नही लिया। वह वकील का कर्त्तव्य दोनो पक्षों के बीच पड़ी दरार को पाटने का बताते है। निश्चय ही गाँधी जी की यह सीख 21वीं सदी के लिए बड़ी महत्वपूर्ण सीख है।[6]

महात्मा गाँधी ने ब्रह्मचर्य पर बहुत जोर दिया है। उनका कहना है ब्रह्मचर्य शरीर रक्षण, बुद्धि रक्षण और आत्म रक्षण तीनों है जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य का वर्त नही रखता वह शरीर, बुद्धि और आत्मा तीनों को गंवाता है। ब्रह्मचर्य वर्त बड़ा जटिल है। इसके लिए सर्वप्रथम आन्नद और उपभोग की प्रवृत्ति से बिल्कुल मुक्त होना पड़ता है। ब्रह्मचर्य जैसी कठोर तपस्या के फलस्वरूप साक्षात्कार ब्रह्म के दर्शन होते है। गाँधी जी के यह सूत्र 21वीं सदी में अति आवश्यक है क्योंकि आन्नद विषय वासना और उपभोग की प्रवृत्ति अपने चरम पर पहुंच चूंकी है। उनका एक परम संदेश है बुरे आदमी से नही बल्कि उसकी बुराई से घृणा करो। महात्मा गाँधी जी की आत्मकथा को 21वीं सदी के लिए किसी महादेव से कम नही आंकना चाहिए। क्योंकि 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' एक कृति ही नहीं बल्कि समाज के लिए एक सच्चे पथ–प्रदर्शक के समान है।[7]

भारत में अछूत प्रथा की सामाजिक बुराई वर्तमान में राजनीतिक रूप धारण कर चुकी है। जातिगत रूप में यह हमारी राजनीति को सोधे रूप में प्रभावित कर रही है। गाँधी जी ने अपने जीवन काल में इस बुराई को समाप्त करने के लिए व्यावहारिक रूप में कार्य किया और स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने गाँधी जी से प्रभावित होकर इस बुराई की समाप्ति के लिए संविधान में विशेष प्रावधान किए। फिर भी हम इस बुराई को समाप्त करने में ज्यादा सफल नहीं रहे परंतु इसके लिए गाँधीवादी विचारधारा नहीं अपितु हमारी जातिगत राजनीति जिम्मेदार है।

यह कहना कि गाँधी जी का सत्याग्रह सम्बन्धी दर्शन वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है, असंगत है। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जो ने नस्लभेद के विरूद्ध तथा भारतीय मजदूरों के अधिकारों के लिए सत्याग्रह किया और उसमें वे सफल हुए। उनके बाद विश्व समुदाय ने नस्लभेद समाप्त करने के लिए गाँधीवादी तकनीक अहिंसात्मक असहयोग को अपनाया और दक्षिण अफ्रीका का सामूहिक बहिष्कार सभी देशों के द्वारा किया गया। वर्तमान में दक्षिण अफ्रीका में नस्लभेद की समाप्ति गाँधीवाद की सफलता है।

दक्षिण अफ्रीका में ही नेल्सन मंडेला ने नस्लभेद के विरूद्ध एक लम्बा अहिंसात्मक संघर्ष किया। उन्होंने गाँधी जी को अपना आदर्श माना है। इसलिए जब विश्व के अनेक महापुरूष आज भी गाँधी जी स प्रेरणा प्राप्त कर रहे है तो यह कहना कि गाँधीवाद अब अप्रासांगिक हो चुका है, अनुचित है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग नेपोलियन या हिटलर से प्रभावित नही हुए जबकि गाँधी

जी के जीवन ने उन पर व्यापक प्रभाव डाला। गाँधी जी की सत्य और अहिंसा सम्बन्धी धारणा में ही उन्हें अपने संघर्ष की सफलता दिखाई दी। गाँधी जी से प्रेरणा लेकर ही उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में नस्लभेद के विरूद्ध सत्याग्रह किया और अपने अहिंसात्मक संघर्ष में सफलता प्राप्त की।

सत्याग्रह की गाँधीवादी अवधारणा आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि उनके समय में थी। वर्तमान में भी लोग किसी समाज विरोधी कार्य का विरोध करने के लिए अथवा सरकार के अनुचित फैसलों को रोकने के लिए गाँधी जी की सत्याग्रह की धारणा को अपनाते है। यद्यपि आज ऐसे आन्दोलनों में अथवा प्रदर्शनों में कुछ लोग हिंसा का सहारा लेते है परंतु इसमें गाँधीवादी धारणा नहीं अपितु हमारी विकृत मानसिक स्थिति उतरदायी है।[8]

भारत में भी स्वतंत्रता के पश्चात अन्य देशों की भांति ओद्यौगिकरण की प्रक्रिया के साथ एक नए यग की शुरूआत हुई। नेहरू इस युग का नेतृत्व कर रहे थे। इस औद्योगिकरण की प्रक्रिया का एक परिणाम यह निकला कि औद्योगिकरण बहुत अधिक समस्याऐं भारतीय समाज में लेकर आया। इससे बेरोजगारी बढ़ी, कृषि की पूर्णतया उपेक्षा की गई तथा कृषि पर आधारित उद्योगों की अनदेखी की गई। शहरीकरण को बढ़ावा मिला और झुग्गियाँ बड़ी–बड़ी कोठियों की चमक में दबकर रह गई। कहा जा सकता है कि औद्योगिकरण ने भारत में गरीबी को और अधिक बढ़ावा दिया है।

इन परिस्थितियों में गाँधी के लघु तथा ग्राम उद्योग के विचार का, रोटी श्रम सिद्धान्त का तथा ट्रस्टीशिप सिद्धान्त का महत्व पहले से भी अधिक हो गया है। इन विचारों को अपनाने की आवश्यकता है।

गाँधी जी ने गरीबी के अजगर से निपटने के लिए लघु तथा ग्राम उद्योगों की स्थापना पर बल दिया। उद्योगों के केन्द्रीयकरण, तकनीकी विकास और मशीनीकरण का वे शोषण का प्रतीक मानते थे। तकनीकी विकास और मशीनीकरण को वे बेरोजगारी बढ़ाने वाला मानते थे। लघु और ग्राम उद्योगों की स्थापना से रोजगार के अवसर बढ़ते है, प्रत्येक व्यक्ति की दैनिक आवश्यकताऐं पूरी होती है और पूंजीवादी व्यवस्था का भी अभाव रहता है।[9]

गाँधीवादी अहिंसा किसी भी ऐसे विचार को स्वीकार नहीं करती जिसके अन्तर्गत किसी स्वस्थ मनुष्य को जिसने काम नहीं किया है, खाना दिया जाऐं। गाँधी जी का विचार था कि जिस आदमी ने काम नहीं किया उसे खाने का भी अधिकार नहीं है। वे गरीबों की दया करने की अपेक्षा उन्हें काम देने का आग्रह करते थे। यदि लोगों को काम दिया जाये तो गरीबी अपने आप समाप्त हो जाऐगी और गरीबी से उत्पन्न होने वाली बहुत सी समस्याऐं भी। इसलिए रोटी श्रम सिद्धान्त आज भी आवश्यकता बन गया है।

आज के समाज की सबसे बड़ी समस्या गरीब और अमीर में बढ़ता अंतर है। इससे दोनो वर्गो के मध्य एक संघर्ष उत्पन्न होने का डर रहता है। गाँधी जी ने अपने जीवन काल में इस समस्या से निपटने के लिए ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रस्तुत किया था जिसमें किसी भी व्यक्ति को आवश्यकता से अधिक सम्पति रखने का नैतिक आधार पर कोई अधिकार नही था। वर्तमान परिस्थितियों में जबकि अमीर अधिक अमीर और गरीब अधिक गरीब होता जा रहा है तो यह सिद्धांत इस समस्या को दूर करने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

गाँधी जी सादा जीवन जीने में विश्वास रखते थे। उनका यह आदर्श वर्तमान परिस्थितियों में अनुकरणीय है। यदि हम इच्छाऐं और आवश्यकताऐं बढ़ाते है तो इसके साथ ही गरीबी को भी बढ़ावा देते है क्योंकि उनकी पूर्ति के लिए हम आवश्यकता से अधिक धन और वस्तुओं का संग्रह करते है। यदि गाँधी जी का अनुसरण करते हुए मनुष्य अपनी आवश्यकताऐं न्यूनतम कर ले तो गरीबी की समस्या से निपटा जा सकता है।

गाँधी जी ने अपने जीवन काल में वैश्वीकरण की प्रक्रिया का विरोध किया था। उनका विचार था कि वैश्वीकरण साम्राज्यवादी और पूंजीवादी शक्तियों का गरीब राष्ट्रों पर आधिपत्य स्थापित करने का नए ढंग का आक्रमण है। वे इसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के शोषण करने का ढंग मानते थे।[10]

आज पूरा विश्व वैश्वीकरण की प्रक्रिया की चपेट में है और इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे है। विकासशील और अविकसित राष्ट्रों पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का नियन्त्रण बढ़ता जा रहा है। अतः वैश्वीकरण की प्रक्रिया का गाँधी जी द्वारा विरोध करने का विचार तर्कसंगत नजर आता है। आज वैश्वीकरण के कारण पिछड़े देशों में गरीबी और बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

दुनिया में उदारवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रमुख रणनीतिकारों में शामिल रहे प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह का विकास के गाधीवादी आर्थिक माडल और सतत् विकास की गाँधी जी की दृष्टि को सही ठहराया। आर्थिक विकास की नई ऊँचाईयों का पैमाना गठने की हौड़ में सम्पन्न राष्ट्रों द्वारा दुनिया के पर्यावरण और परिस्थितियों को पहुंचाऐं जा रहे नुकसान की और प्रधानमंत्री ने साफ इशारा किया। उन्होंने कहा कि दुनिया सभी सामाजिक संगठनों की इस पर चिंता वाजिब है। उन्होंने कहा कि, "गाँधी जी की बातों से सीख लेते हुए हमें विकास का ऐसा ढांचा तैयार करना होगा जिसमें समाज के सभी लोगों की जरूरतें पूरी हो और लाभ कमाने की मानसिकता पर अकुंश लग सके। इसी संदर्भ में मनमोहन सिंह ने विकसित राष्ट्रों की ज्यादा लाभ कमाने की प्रकृति की और इशारा किया। उन्होंने दो टूक कहा कि दुनिया केवल अमीरों की उच्च जीवन शैली का बोझ नही ढो सकती। प्रधानमंत्री जी ने गाँधी जी के अहिंसा और सत्याग्रह की ताकत को माजूदा समस्याओं व संघर्षो का समाधान निकालने का सबसे कारगर मन्त्र बताया। उन्होंने कहा कि हमें असंतोष का नजरिया रखने वालों की बात भी सुननी चाहिए।"[11]

लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों को गाँधी जी एक बुराई मानते थे। उन्होंने दलीय व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है। दलीय व्यवस्था की बुराईयां भारत में पूर्ण रूप से उभर कर सामने आई है। राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा बड़े स्तर पर किऐ जाने वाले दल बदल से सरकारें अस्थिर हुई है। भारत में केन्द्र तथा राज्यों में कितनी ही बार दल बदल के कारण अवधि पूर्ण होने से पहले

सरकारों का पतन हुआ है। इसके कारण सरकारों द्वारा बनाई जाने वाली विकास योजनाऐं अधर में ही लटक गई है। सिद्धान्तहीन राजनीति आधुनिक भारतीय राजनीतिक दलों का मुख्य एजेंडा बन गई है। भारतीय राजनीतिक दलों के सदस्यो को दलीय अनुशासन के कारण अपनी अर्न्तामा से कुछ कहने का अवसर ही नही मिल पाता है। उन्हें वही सब कुछ कहना और सुनना पड़ता है जो निर्देश उन्हें दल की और से दिए जाते है। भारत में लोकतन्त्र की विकृत अवस्था, राजनेताओं के राजनीतिक चरित्र के पतन और राजनीतिक दलों की अवसरवादी राजनीति को देखते हुए गाँधी जी के राजनीतिक विचार पहले से अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते है।

भारत में लोकतन्त्र और राजनीति में आई विकृतियों को दूर करने के लिए गाँधी जी के कल्पना के लोकतन्त्र की स्थापना प्रासंगिक लगती है। उनका लोकतन्त्र नैतिक और अहिंसक लोकतन्त्र था जिसमें राज्य की सम्पूर्ण को ग्राम पंचायतों और दूसरी स्वायत संस्थाओं में विकेन्द्रित करना था।[12]

गाँधी जी ने शक्ति और सत्ता के विकेन्द्रीयकरण को एक अहिंसात्मक राज्य की स्थापना के लिए अनिवार्य माना था। उनका विचार था कि विकेन्द्रीकरण को अवस्था में ही सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना हो सकती है। परंतु दुख की बात यह है कि भारत में विकेन्द्रीकरण की अपेक्षा केन्द्रीयकरण को अधिक बढ़ावा दिया गया है। यद्यपि यह भी सत्य है कि देश की एकता और सुरक्षा के लिए केन्द्रीय सरकार का शक्तिशाली होना अनिवार्य है परतु भारतीय राजनीतिक इतिहास में स्वतंत्रता के बाद अधिकांश केन्द्रीय सरकारों ने अपनी शक्तियों का दुरूपयोग किया है।

गाँधी जी की विकेन्द्रीयकरण की व्यवस्था में उनकी ग्राम पंचायत की अवधारणा उसका आधार स्तम्भ है परंतु स्वतंत्रता के बाद भारत में ग्राम पंचायतों के विकास की ओर उतना ध्यान नहीं दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय गांव विकास की दौड़ में पिछड़ गये। पंचायतों के कार्यो में राज्य सरकारों का हस्तक्षेप बढ़ गया जिससे वे स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य नही कर सकी।

गाँधी जी ने अपने जीवन काल में यह विचार व्यक्त किया था कि भारत का विकास गांव के विकास में निहीत है न कि बड़े शहरों के। वर्तमान में भारतीय सरकार ने गाँधी जी के इस विचार के महत्व को पहचाना है। इसलिए भारतीय संसद ने पंचायतों के संगठन से सम्बन्धित 73वां सविधानिक संशोधन पारित किया जो गाँधी जी की विकेन्द्रीयकरण और पंचायती राज व्यवस्था की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

आज स्वाधीनता के इतने वर्षो बाद जब पंचायती राज की स्थापना का अवसर आया है तब हमें ध्यान आता है कि गाँधी जी के स्वपनों के भारत का जहाँ स्मृद्धि, उत्थान की प्रक्रिया जड़ों से अर्थात् ग्रामों से आरम्भ होकर देशव्यापी हो जाती है। ग्राम स्वराज्य की परिकल्पना गाँधी जी ने की, आज समय आता है कि ग्रामोत्थान द्वारा हम उसे साकार रूप प्रदान करें।[13]

शस्त्र दौड़ ने अन्तर्राष्ट्रीय समस्या को सुलझाने में कोई मदद नही की है। इसके विपरित इसने अन्तर्राष्ट्रीय तनाव और संघर्ष का बढ़ावा दिया है। निशस्त्रीकरण समाज की शांति और खुशी के लिए हमारी एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। निशस्त्रीकरण के लिए संघर्ष एक सभ्यतापूर्ण संघर्ष है। वास्तव में यह हमारे अस्तित्व और शांति के लिए संघर्ष है। गाँधी जी ने इस समस्या से बाहर निकलने के लिए अहिंसा की तकनीक को विकसित किया।

परमाणु शस्त्रों के विकास के साथ ही हिंसा का स्वरूप और भयानक हो गया है। हिंसा की विश्व समुदाय पर पकड़ पहले से भी मजबूत हो गई है जबकि हिंसा हमारे उद्देश्यों की पूर्ति में हजारो बार असफल हो चुकी है परंतु फिर भी हमारी आस्था इसमें दिनों दिन बढ़ती जा रही है। गाँधीवादी धारणा में इसका मुख्य कारण मानव की विकृत मानसिक स्थिति है।

हमें खुले दिमाग से घृणा और ईर्ष्या से दूर हटकर विश्व शांति के लिए सोचना चाहिए। प्राचीन समय में सैनिक शिक्षा के अध्ययन का प्रावधान था परंतु उस समय में धार्मिक संतों द्वारा शांति और अहिंसा की शिक्षा भी लोगों को दी जाती थी। विश्व में अस्त्र शस्त्रों के प्रचार प्रसार को रोकने, लोगों के मस्तिष्क और दिल से घृणा को दूर करने के लिए आज हमें इसी प्रकार को अहिंसा की शिक्षा की आवश्यकता है। गाँधीवादी विचार इस सम्बन्ध में काफी उपयोगी सिद्ध हो सकते है क्योंकि अहिंसा और सत्य की जितनी स्पष्ट व्याख्या गाँधी जी के द्वारा की गई है अन्य किसी विचारक या संत के द्वारा नहीं की गई है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में संघर्ष और तनाव व्याप्त रहता है। यह संघर्ष और तनाव कई बार दो देशों के मध्य युद्ध का कारण भी बन जाता है। इन अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षो को दूर करने में भी गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा की अवधारणा को आधार बनाया। इस आधार पर गाँधी जी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को दूर करने के लिए जो तकनीके सुझाई वे आज भी सार्थक है।

महात्मा गाँधी ने 91 वर्ष पूर्व जिस गुलामी से मुक्त होने का आग्रह किया उसका हमने 15 अगस्त 1947 के बाद संज्ञान तक नही किया। गुलामी काल की जिन विकृतियों से उबरकर सामाजिक समरसता के लिए गाँधी जी ने प्रयास किया था वे आज से पहले कही अधिक व्यापक होती जा रही है। भारतीयत्व अर्थात अध्यात्मिकता अर्थात नैतिकता अर्थात समरसता को जिस सहजता के साथ एक सनातनी हिन्दू गाँधी जी ने हमारे समक्ष प्रस्तुत किया उसका समुचित सज्ञान के लिए बिना पाश्चात्य अवधारणा के पीछे भागते रहना मृगमरीचिका ही साबित होगी। आज गाँधी जी की रीति–नीति के अनुरूप चलने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। गाँधी जयन्ती पर उनके चरखे को स्वावलंबन का प्रतीत बनाने तथा उसके अनुरूप नीतियों का निर्धारण करने से ही हम अपनी स्वाभिमानी राष्ट्र की पहचान को कायम रखते हुए आगे बढ़ सकते है।[14]

गाँधी जी के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को दूर करने के लिए विवादित पक्षों के मध्य वार्ता, समझौता और पंच निर्णय मुख्य तकनीकें है। ये ऐसे साधन है जिन पर एक बार विवादित पक्षों के मध्य सहमति हो जाए तो इनके द्वारा स्थापित शांति स्थायी होती है। गाँधी जी के इन विचारों की सार्थकता अनुमान इस बात से लगाया जा

सकता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में भी इन्हें अपनाया गया है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि गाँधी जी के धर्म और राजनीति सम्बन्धी विचार उनके जीवन काल में जितने सार्थक थे आज उससे भी अधिक सार्थक है। भारतीय राजनीति में तो उनकी सार्थकता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि भारतीय राजनीतिक दल सत्ता प्राप्ति के लिए आज भी गाँधीवादी विचारधारा का प्रबल समर्थक होने का दावा करते है। कांग्रेस स्वतंत्रता के पश्चात से ही इस तर्क का सहारा लेकर शासन करती आई है। वर्तमान समय में जब भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार का बोलबाला है तो गाँधीवादी नैतिक मूल्यों की स्थापना के विचार पर बल दिया जा रहा है। अतः गाँधी जी के धर्म और राजनीति सम्बन्धी विचार आज भी सार्थक है। आवश्यकता केवल उन्हें परिवर्तित परिस्थियितों के संदर्भ में समझने की और उनकी नए वातावरण के सन्दर्भ में व्याख्या करने की है।

सन्दर्भ

1. के॰ एस॰ सक्सेना, गीता अग्रवाल, गाँधी : धर्म एवं लोकतन्त्र, सबलाइम पब्लिकेशन, जयपुर, 2005, पृ॰ 108.
2. वही, पृ॰ 109.
3. के॰ डी॰ गंगराडे, गाँधी की शाश्वत प्रासंगिकता, गाँधी स्मृति एण्ड दर्शन समिति, न्यू दिल्ली, 2001, पृ॰ 28.
4. रामजी सिंह, गाँधी विचार दर्शन, धर्म, राजनीति और धर्मनीति, मानक पब्लिकेशन्स, प्रा॰ लि॰, दिल्ली, 1995, पृ॰ 55.
5. रामेश्वर मिश्र पंकज, गाँधी जी की विश्व दृष्टि, मानक पब्लिकेशन्स प्रा॰ लि॰, दिल्ली, 1994, पृ॰ 83.
6. राजेश कश्यप, "आज कितने प्रासंगिक है गाँधी जी के सत्य के प्रयोग", दैनिक ट्रिब्यून, चण्ड़ीगढ़, 2 अक्तूबर, 2009.
7. वही,
8. आर॰ पी॰ मिश्रा एण्ड गंगराडे, गाँधीयन अलटरनेटिव, कन्सैपट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2005, पृ॰ 296.
9. आर॰ के॰ प्रभु, यू॰ आर॰ राव, महात्मा गाँधी के विचार, नैशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2005, पृ॰ 187.
10. डेविट हार्डिमन, गाँधी इन हिज टाईम एण्ड अवरस, परमानैन्ट ब्लैक प्रकाशन, दिल्ली, 2003, पृ॰ 169.
11. मनमोहन सिंह, "विकास का गाँधीवादी मॉडल ही सही", दैनिक जागरण, पानीपत, 30 जनवरी, 2007.
12. रामजी सिंह, गाँधी और भावी विश्व व्यवस्था, कॉमनवेल्थ पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2000, पृ॰ 151.
13. एन॰ राधाकृष्णन, महात्मा गाँधी और सामाजिक न्याय, गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, 2001, पृ॰ 121. आर॰ पी॰ मिश्रा एण्ड गंगराडे, गाँधीयन अलटरनेटिव, कन्सैपट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2005, पृ॰ 296.
14. राजनाथ सिंह सूर्य, "एक अद्‌भूत महात्मा", दैनिक जागरण, पानीपत, 2 अक्तूबर, 2009.